

# कृष्णा सोबती

एक मूल्यांकन



संपादक

छबिल कुमार मेहेर

ISBN: 978-93-80458-86-1

प्रकाशक

**सामयिक बुक्स**

3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज,  
एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली-110002

संस्करण : प्रथम, 2016 ₹ 695

© लेखक

आवरण : निर्दोष त्यागी

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : कल्याणी कम्प्यूटर सर्विसेज,  
नई दिल्ली

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट, दिल्ली

सुप्रसिद्ध कवि, आलोचक,  
चिन्तक एवं कलामर्मज्ञ  
अशोक वाजपेयी को...

**KRISHNA SOBTI : EK MULYANKAN**  
(Aalochna) Ed. by CHHABILA KUMAR MEHER

Published By : **SAMAYIK Books**  
3320-21 Jatwara, Daryaganj,  
N.S. Marg, New Delhi-110002 (INDIA)  
Tel. : 011 - 2328 2733, 2327 0715  
Mob.: 07065507086, 09868934715  
E-mail : samayikprakashan@gmail.com  
Website : www.samayikprakashan.com

## मित्रो मरजानी : कथा में नयी स्त्री का जन्म

### ◆ आशुतोष

कृष्णा सोबती भारतीय कथाधारा का विश्वसनीय स्वर हैं। उनके कथा सृजन के कई छोर हैं। वे एक तरफ भारतीय चिन्ताधारा से जुड़ी हैं तो दूसरी ओर स्त्रियों की स्वायत्त दुनिया के लिए एक अलग प्रकार की लड़ाई में हरावल दस्ते के तौर पर भी खड़ी हैं। उनका लेखन स्त्रियों की खुदमुख्तारी के लिए एक प्रकार का सृजनात्मक सत्याग्रह है। कृष्णा सोबती का लेखन युग चेतना और व्यक्ति चेतना के द्वन्द्वात्मक रिश्ते में विकसित हुआ है। वे इसी द्वन्द्वात्मकता में अपने समय के दबावों और समस्त वैचारिक सरणियों, राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनों में सचेत तौर पर सहभागी बनती हैं। अन्य तमाम बातों के अलावा यह एक बात भी उनकी रचनाधर्मिता को महत्वपूर्ण बनाती है।

रिचर्ड होगर्ट ने कहा है कि—“महान कलाकार सम्पूर्ण मानव का गहराई से चित्रण करता है।” होगर्ट के इस कथन की कथात्मक परिणति कृष्णा सोबती के चर्चित उपन्यास ‘मित्रो मरजानी’ में देखी जा सकती है। ‘मित्रो मरजानी’ में कृष्णा सोबती ने मित्रो के माध्यम से स्त्री विमर्श का स्वदेशी आख्यान रचा है। पंजाबी

पृष्ठभूमि के एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की मझली बहू मित्रो अपने व्यक्तित्व और अपने देह के अनुभवों को लेकर परिवार और समाज की स्त्री विषयक धारणाओं और स्त्री यौनिकता तथा शुचिता सम्बन्धी समस्त मान्यताओं को कठघरे में खड़ा कर देती है।

गुरुदास और धनवन्ती अपने तीन बेटों-बनवारी, सरदारी, गुलजारी तथा तीन बहुओं सुहाग, मित्रो तथा सबसे छोटी फूलां के साथ गुजर-बसर कर रहे थे जिसमें सुहाग बनवारी की दूसरी पत्नी है। बेटे अपने माता-पिता धनवन्ती और गुरुदास की मान-मर्यादा का ख्याल रखते हैं। बनवारी की दूसरी बहू सुहाग भी इस मामले में अपने पति का ही अनुसरण करती है, और अपने सास-ससुर तथा पति से नेक बहू का दर्जा और आशीर्वाद प्राप्त करती है। सबसे छोटी फूलां की अपनी डफली और अपना राग है। वह अपने पति के साथ ही पूरे परिवार को अपने हक-पद के मोर्चे पर उलझाए रहती है। जाहिर है कि इससे संयुक्त परिवार की तथाकथित ‘इज्जत-पत्त’ को झटका लगता है और ऐसे ही एक दिन फूलां गुरुदास-धनवन्ती के ‘इज्जत-पत्त’ को आखिरी झटका दे अपने भाइयों के संग पति गुलजारी की दबी सी सहमति के साथ अपने मायके चली जाती है। फूलां के बाद भी सुहाग अपनी सास धनवन्ती की ही तरह अपने वजूद से बेखबर परिवार के हित में लगी रहती है। गोया वही उसका वजूद भी हो।

इस पूरी कथा में सबसे अहम और निर्णायक कड़ी है मित्रो। वह एक बाचाल, अनियंत्रित और अराजक स्त्री के रूप में कुख्यात है। मित्रो अपने बारे में इस आम राय से स्वयं भली-भाँति वाकिफ भी है। सास धनवन्ती से हक-पद को लेकर जब फूलां लड़ती हैं तो मित्रो फूलां से कहती हैं कि—“फूलांरानी, मैं बुरी-की-बुरी मशहूर थी, पर, लाडो, तू भी चोखा नाम कमाएगी!” यहाँ खास बात यह नहीं है कि मित्रो फूलां के बारे में कुछ कहती हैं, खास यह है कि वह अपने बारे में उस आम राय को बताती हैं जिसमें वह एक बुरी स्त्री के रूप में मशहूर है लेकिन मित्रो को इससे फर्क नहीं पड़ता कि कोई उसे क्या कहता है। अपने व्यक्तित्व का निर्माण उसने खुद किया है। वह अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति के बारे में बेबाक है। अपनी राय के बारे में लापरवाह है किन्तु भारतीय परिवार और समाज में स्त्रियों के आत्मनिर्णय, स्त्रियों की इच्छा, स्त्रियों को वरण की स्वतंत्रता आदि के बारे में कोई जगह नहीं है। इसलिए इन वर्जित क्षेत्रों में किसी स्त्री का प्रवेश उसे अपवादित बना देने के लिए काफी है।